वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मई – 2021

मनुष्य पाप क्यों करता है?

विज्ञान मूलक सत्यधर्म

सुखी होने के उपाय

दूध की गंगा

उन लोगों के प्रति अच्छे बने रहे .....

वर्तमान भविष्य के लिए ख़तरा

अपना लक्ष्य बदलें

देवात्मा के फरमान

* यह मौत की आखरी मंज़िल है कि जहां भली बात ज़हर मालूम होती है।- - - नीच अनुरागों में जहां कोई दखल दे, वहां उसको बुरा मालूम होता है, तो समझ लेना चाहिए कि उसकी आत्मिक मौत का समय निकट आ रहा है।
* किसी जन में उच्च परिवर्तन नहीं आता, तो क्या तुम उदास होते हो? या यह बात है कि मुर्दा जाए दोज़ख़ में या बहिश्त में, मुल्लाओं को हलवे मांडे से काम। यदि कोई मुख़ालिफ कुछ कहता है तो उसको सुनो, एक दूसरे की बात से फायदा उठाओ।
* जिसका जीवन मुख्य काम बन गया, वह तो समाज से बाहर जाकर भी वही काम करेंगे।
* जो जन अपनी 'मैं' का त्याग नहीं करते, नेचर में उनके ख़िलाफ़ बग़ावत आ जाती है।
* जो कहता है कि सब कुछ जानता हूँ, वह आगे कुछ नहीं जान सकता।
* जो और चीज़ों का है, (पैसा, पद, प्रभुत्व) वह हमारा नहीं।
* क्या तुम अपने आप को इस बात से ऊपर महसूस करते हो कि तुम किसी के तरफ़दार नहीं बनोगे।
* हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा कि जब कोई ऐसे आदमी पैदा हों कि जिनके निज के साधन चलें। वह अपने विरुद्ध सोचें और लिखें।
* जो जन झूठी बातों का विश्वास करता है, वह मेरा नहीं, झूठ का है।
* मेरे दिल पर छुरियां चलती हैं जब कोई पैसे भी लेता है, पर काम नहीं करता।
* जो आदमी पैसे लेकर भी काम न करते हों ऐसे आदमी पूरे ठग होते हैं, जब मैं उन्हें ठग कहता हूँ, तो बिल्कुल ठीक कहता हूं।
* पैसे लेकर और काम हो सकते हैं, पर धर्म प्रचार का काम नहीं हो सकता।
* विश्वासघाती होना, ठग होना एक ही बात है।
* नीच घृणा के साथ भर कर यदि कोई किसी का मुंह देखना नहीं चाहता, तो उसका भला कैसे करेंगे।
* जो अंहकारी हैं, दूसरों को घृणा करते हैं, उनका बुरा चाहते हैं, उनमें धर्म कहां? यह महा नीच पतनकारी भाव जहन्नुमी भाव हैं।
* सच्चा प्रचारक वह होता है कि जो घृणा किया जाता है, फिर भी भलाई का काम किए जाता है।
* नीच घृणा न करो, सरल रहो। नीच घृणा वह आग है कि जो आत्मा को जला देती है।
* कर्मचारी ऐसी हालत में हो कि जो दुश्मन भी हों, उनका भी हित कर सकता हो।

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 5
मई – 2021
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य पाप क्यों करता है?

पुराने धर्म मत, (जैन और बुद्ध धर्म को छोड़कर) चाहे वह हिन्दुमत, सनातन धर्म, वेदांत, आर्या समाज, सिक्ख मत, मुस्लिम, ईसाई मत आदि कोई भी हो, सब ईश्वरवादी और ईश्वर पूजक मत ही हैं। उन धर्मो का लक्ष्य है ईश्वर स्तुति, ईश्वर महिमा और ईश्वर का गुणगान करना। इन धर्मो का मुख्य मन्तव्य है ईश्वर की खोज, ईश्वर की भक्ति, ईश्वर का जाप, ईश्वर दर्शन वा ईश्वर प्राप्ति। इसके लिए जो अधिक जाप करता हो, गुणगान करता हो, ईश्वर की स्तुति से भरे ग्रन्थों का ज्ञाता और ज्ञानी हो, उसे महान, उच्च वा पहुंचा हुआ महान पुरुष समझा जाता है, या मनुष्य जन्म को सफल करने वाला महा भाग्यशाली समझा जाता है और उसको सन्मानित किया जाता है।

विज्ञान के युग में वैज्ञानिक विचारों पर आधारित धर्म, केवल मात्र देव धर्म ही है। परम पू० भगवान देवात्मा ने विज्ञान की नींव पर ऐसे धर्म की स्थापना की है, कि इसकी कुल शिक्षा नेचर के अटल नियमों पर और नेचर की सत्य घटनाओं पर आधारित है, इसीलिए इसे सांईसी धर्म या विज्ञान मूलक धर्म भी कहा जाता है। विज्ञान पर आधारित होने के कारण देव धर्म ईश्वर जैसे किसी अस्तित्व को नहीं मानता और यह पूर्ण निरीश्वरवादी धर्म है। देव धर्म का मुख्य लक्ष्य है मनुष्य के निज के अस्तित्व की विनाश वा दुख से मुक्ति वा सुरक्षा वा उसका विकास करना। नीच जीवन से दुर्बल मनुष्य को निकालकर, उच्च जीवन प्रदान करके, मनुष्य को चारों जगतों सम्बन्धी विकास के महान नियम का साथी वा भक्त बनाकर चारों जगतों की विशुद्ध सेवा में रत रहकर उसका सच्चा विकास करना।

अब देखना यह है कि मनुष्य को नीच कौन बनाता है, या पापी कौन बनाता है? या पापी वा नीच मनुष्य कौन होता है? स्वाभाविक ही नशई, शराबी, हुक्का, चरस, चण्डू, अफीम, सुलफा पीने वाले नशेड़ियों को बुरा वा नीच समझा जाता है, मासाहारियों, बुच्चड़ों, कसाईयों, शिकारियों को जो मासूम वा बेगुनाहों का घात करते हैं, उनको नीच कहा जाता है। मन्दकर्मियों, बदचलनों, बलात्कारियों को, कंजरों, वैश्याओं और उनके साथियों, लुच्चे लफंगे इन्सानों को नीच समझा जाता है। चोरों, डाकुओं, राहजनों, ठगों, रिश्वतखोरों, बेईमानों, दूसरों का हक अपहरणकर्ताओं, पराया खून

पीने वालों को बुरा समझा जाता है, इसीलिए देव धर्म उपरोक्त सारे पापों को छुड़ाकर अपने निकट करता है।

अगला प्रश्न है कि मनुष्य उक्त पाप क्यों करता है? मनुष्य अपने सुखों का सगा है। सदा अपना सुख चाहता है। निज सुख प्राप्ति की हवस के साथ बौख़ला जाता है और पाप करने के लिए बेबस और मजबूर हो जाता है। मनुष्य अपनी "मैं" को प्यार करता है। अपने सुखों के लिए जोरदार अकर्षण रखता है, उन सुखों की प्रप्ति के लिए सरपट दौड़ पड़ता है और पाप लिप्त हो जाता है।

हां मनुष्य ही अपने आपको अधिक प्यार करता है। "मैं" को प्यार करता है। मेरा सुख, मेरा रस, मेरी मौज, मेरा स्वाद, मेरा लाभ, मेरा आराम, इन सब को जोर दार प्यार करता है। अपने सुखों का जोरदार इश्क रखता है। "मैं" का प्यार स्वार्थ सिद्धि करता है। उसकी तृप्ति मनुष्य को स्वार्थी बनाती है। "मैं" के इश्क से ही स्वार्थ पैदा होता है। हमारी "मैं" या अंह ही हमारे सारे उपरोक्त नीच कर्मों वा पाप कर्मों का स्त्रोत है। यही स्वार्थ सब बुराईयों की जड़ है।

"अंह भाव स्वार्थ का उत्पादक, स्वार्थ भाव जीवन का नाशक, स्वार्थ तजो तब जीवन पाओ," यह गुरू महाराज का फरमान है। मनुष्य के महा नाश का कारण उसका अंह अनुराग है और उससे उपजा स्वार्थ का भाव है।

स्वार्थी मनुष्य के सम्बन्ध में परम पू० भगवान देवात्मा इस प्रकार फरमाते हैं:-

"जो मनुष्य जितना नीच होता है, उतना ही वह स्वार्थ से भरा हुआ होता है और इसीलिए स्वार्थ से परिपूर्ण नीच जनों के द्वारा किसी समाज या देश का कोई हित साधन नहीं हो सकता। जो मनुष्य जितना स्वार्थ त्याग करता है, वह उतना ही उच्च बनता है और उतना ही दूसरों का हित साधन करता है। हमारे सामाजिक जनों के भीतर भी जितना स्वार्थ त्याग का भाव बढ़ेगा, उतना ही उनका और समाज का हित साधन होगा।"

अपनी स्वार्थ सिद्धि, सुरक्षा सिद्धि, या सुख स्वाद आराम सिद्धि करके न कुछ अपना और न किसी और या समाज या देश का भला कर सकते हैं। दूसरे धर्मों में ईश्वर भक्ति, ईश्वर पूजा, ईश्वर के गुणगान की महत्तता है, देव धर्म में मनुष्य को "अंह" बोधी, अधिक से अधिक अंह मुक्त और त्यागी बनाकर अधिक से अधिक स्वार्थ त्याग करने वालों की सच्ची महत्तता वा महानता दिखाई जाती है। यही देव धर्म का मुख्य कारज है। देव धर्म में आकर, देव धर्म में रहकर, देव धर्म का कार्यकर्ता बनकर, यदि मनुष्य अपने महा शत्रु 'अंह' वा "मैं" के प्रेम का बोधी न बने और काफी सीमा तक अंह मुक्त नहीं बनता या मुक्त होना अपना मुख्य लक्ष्य नहीं बनाता, वह मनुष्य चाहे मोटे पापों से मुक्त भी हो जावें, वह न केवल अपना वा समाज का कोई भला नहीं कर सकता है, बल्कि वह अपने वा दूसरों के महा नाश का कारण बने बिना नहीं रह सकता अपनी "मैं" की गुलामी, अंह की गुलामी ही सारे पापों, बुराईयों, हक अपहरण, ज्यादतियों, अन्याय, जुल्मों, सितमों, अनर्थों, नर्कों वा बर्बादियों की स्त्रोत होती है। "मैं" के प्यार के अन्धकार में पर का बोध नहीं होता, पर की हस्ती, पर के एहसासों का ख़्याल तक नहीं होता, जैसे किसी शेर, चीते को,

किसी हिरण, बकरी या गाय आदि को चीरने फाड़ने समय उनकी जान, उनकी पीड़ा वा दर्द, उनके सहम, ख़ौफ और तड़पन आदि का कोई एहसास नहीं होता उसी प्रकार "अंह" परिपूर्ण मनुष्यों को पर के दुख, सुख की कोई होश नही होती। मानव हृदय के भीतर "मैं" के प्रेम के बढ़ जाने, अंह की गुलामी के बढ़ने या निज स्वार्थ के हावी होने पर उसे शेर, चीते, सांप जैसा हिंसक बना देता है। उस हृदय के भीतर शेर, बघियाड़ या नाग भावनाएं गोते खाने लगती हैं। जहां "मैं" का इश्क का राज होता है, वहां पर सम्बन्धी किसी ख़्याल की रसाई असम्भव है।

इस सम्बन्ध में गुरू महाराज फरमाते हैं:-

"अंह संस्कृत का शब्द है, इसका अर्थ है "मैं" "पर" भी संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है कोई और दूसरा। "मैं" और 'पर' एक नहीं। जब तक किसी के हृदयों में, केवल इस प्रकार की इच्छा पैदा होती रहती है, कि मैं अपनी वासना या सुख तृष्णा को तृप्त करूं। मैं अपना आराम वा सुख प्राप्त करूं, मैं अपना फायदा देखूं साथ दूसरे को चाहे कितना ही बेवजह दुख मिले और चाहे कितनी भी नजायज़ हानि पंहुचे, तब तक उसके अन्दर "मैं" का कब्जा रहता है। यह "मैं" का भाव जब तक काम करता है और मनुष्य अपनी इस "मैं" के द्वारा प्रेरित होकर अपने किसी सुख या आराम या लाभ के लिए किसी दूसरे की किसी अनुचित हानि वा दुख को महसूस नहीं करता और किसी और को अनुचित दुख वा हानि पहुंचाकर भी अपनी एक वा दूसरी प्रकार की तृप्ति ढूंडता रहता है। इसी अंह की ही महा भयानक गुलामी से ही नाना प्रकार की तृष्ति ढूंडता रहता है, तब तक वह केवल "मैं" और अंह का ही दास रहता है। इसी अंह की ही महा भयानक गुलामी से ही नाना प्रकार के पापों वा अपराधों और अन्याय और जुल्मों की उत्पत्ति होती है।

यह अंह का दास, और पर के सम्बन्ध में पूर्ण अबोधी, चाहे किसी धर्म मत को मानता हो, चाहे किसी देवता या देवी का या ईश्वर का इक़रार करता हो, चाहे किसी पुस्तक को धर्म पुस्तक वा ईश्वर की पुस्तक कहता हो, चाहे किसी भी चीज़ का पाठ और पूजन भी करता हो, चाहे किसी प्रकार का तप वा जप करता हो, वह अवश्य ही पापाचारी और अज्ञानी और विषय लिप्त और मोह में लिप्त और नीच श्रेणी का जीव और नीच जीवन धारी आत्मा है।"----

"अंह" प्रेम का कब्जा या अधिकार मनुष्य को एक तरफ अवश्य ही कुछ जनों का पक्षपाती बनाता है, दूसरी तरफ कुछ का घृणाकारी, द्वेषी, शत्रु, जालिम वा अनर्थकारी बनाता है। वह जो उसके सुख, उसके आराम, उसकी सेवा, उसके सन्मान, सत्कार, उसकी प्रशंसा या स्वार्थ सिद्धि के पलैन में सहायक बनता है, वह अपना प्यारा, अच्छा, ठीक, महान और उच्च नज़र आता है, उसका पैमाना मैरिट, सत्य वा शुभ नहीं रहता, केवल और केवल "मैं" निज सुख, निज सुरक्षा, निज सन्मान ही रहता है। और कोई चाहे कितना अच्छा हो, त्यागी हो, सेवाकारी हो, समाज सेवी हो, उच्च नतीजे वा सफलता पैदा करता हो, दान देता हो, परन्तु उसकी सुख सिद्धि में सहायक न होता हो, वह बेग़ाना, खराब, तुच्छ नीच और बुरा वा वैरी दिखाई देता है। वह उसको परे करना, दूर करना वा ख़त्म करना चाहता है। उसका लक्ष्य अपना सुख ही बन जाता है। कोई संस्था, परिवार या समाज के साथ या

उसके भले बुरे के साथ उसका कोई सम्बन्ध वा सरोकार नहीं रहता। उसकी बला से कोई बर्बाद हो जाए, किसी संस्था वा समाज की कितनी हानि हो जाए, उसके सिर पर जूं तक नहीं रेंगती। निज वा अपनी "मैं" से परे उसका ध्यान तक नहीं जाता। रावण की तरह न अपनी बर्बादी, न परिवार, समाज संस्था सम्बन्धी बर्बादी कुछ भी नज़र आती है। जैसे जहां आग है, वहां जलना, फूंकना वा राख ही होगी। उसी प्रकार जहां "मैं" का राज है, वहां परिवारों, संस्थाओं वा समाजों का नाश ही नाश होगा। रूस के डिक्टेटर स्टालिन ने भारत के राष्टपति वा फिलासफर सर राधा कृष्ण को बुलाकर पूछा था कि चन्द शब्दों में बताओ कि देशों वा संसार की समस्या का मुख्य मसला क्या है? उन्होंने उत्तर दिया था कि मुख्य मसला है कि "मैं ही हूं" इसका हल यह है कि "मैं भी हूं" पर और भी हैं"

जहां गज़नवी, हलाकू, चंगेज़ दनदनाएंगे, वहां उजड़े गांव, नगर, अबादियां, खून खराबे, लूट मार, की कोई कमी नहीं रहेगी, जहां "मैं" का राज वा इश्क है वहां परिवारों, संस्थाओं, समाजों, मनुष्यों, उच्च कारजों की तबाही और नाश की कमी नहीं रहती।

एक अंहकारी, महा स्वार्थी अपने निज सुख के लिए, अपनी मां, बाप, बहन, भाई, अपनी पत्नी तक को अपने निज सुख में अड़चन देखकर मार कर ख़त्म करने में पीछे नहीं रहता।

जिस हृदय पर "मैं" का राज है वहां रत्ती भर अलोचना भी सहन नहीं होती, बाल भर अलोचना से भी अलर्जी होती है। अलोचना ज़ख़्मों पर नमक की तरह लगती है। जो अलोचना का एक शब्द भी बोलता है, वह बेगाना, वैरी उसी समय ही बन जाता है, सच्ची, सेहतमन्द अलोचना के बिना किसी मनुष्य, परिवार संस्था, समाज, देश वा सरकार की रक्षा वा भलाई असम्भव है। जो अपने विरुद्ध सुन नहीं सकता, उसका कभी भला नहीं हो सकता और किसी का भला तो उसने क्या करना है। मनुष्य का यह दुर्भाग्य है कि चाहे अलोचना करने वाला उपकारी हितैषी, सेवाकारी वा खास अपना ही क्यों न हो, वह शत्रु ही नज़र आता है।

जहां शुभ का राज है, वहां "मैं" वा "अंह" स्वार्थ, पाप बाल भर भी पनप नहीं सकता, जहां "अंह" वा "मैं" वा स्वार्थ का ही राज्य है वहां सच्चा निज हित, परहित, परिवार हित, संस्था हित रता भर भी पनप नहीं सकते। "अंह" का वा परहित का ईट कुत्ते का बैर है।

अपने "अंह" से न दिखने वाली सूक्ष्म कोई चीज़ नहीं, कोई रोग नहीं। जितना अधिक इसका हम पर अधिकार वा कब्जा होता है उतना ही अपना आप अंह मुक्त नज़र आता है। फिर इससे मुक्त होने की इच्छा कैसे पैदा हो। अंह को काफी मात्रा में घटाए बिना मनुष्य को भली प्रकार देव ज्योति, जो हमारा ध्यान हमारे दोषों की तरफ फेरने की समर्थ्य रखती है, वह भी सारा जोर लगाकर भी प्राप्त नहीं होती। इसलिए बुरी तरह हलके गए कुत्ते की तरह अंह के आशिक का हाल हो जाता है, फिर नाश से बचना असम्भव हो जाता है।

बलदेव सिंह

विज्ञान मूलक सत्यधर्म

सच्चा धर्म वही हो सकता है,जो कल्पनाओं और विश्वासों पर नहीं बल्कि विज्ञान पर आधारित हो। वास्तव में अभी तक तो धर्म और विज्ञान के बीच युद्ध हो रहा है। जहां जहां विज्ञान ने धर्म के विरुद्ध परन्तु सत्य पर आधारित कोई बात की है, तब तब धर्म के रक्षकों ने विज्ञान और वैज्ञानिकों पर अत्याचार ही किया है। परन्तु जैसा कि होना चाहिए था, धर्म और विज्ञान के युद्ध में सदा विज्ञान ही अजय रहा है। परम्परागत सभी धर्मों में और विज्ञान में यह मूल अंतर रहा है, कि धर्म विश्वासों पर आधारित है, जब कि विज्ञान सत्यों और तथ्यों पर।

जबकि धर्म और विज्ञान की धारणाएं एक दूसरे के विपरीत है, परन्तु देव धर्म अद्वितीय होने के कारण अपने आप को विज्ञान मूलक धर्म होने का दावा करता है। सच्चे वा विज्ञानमूलक धर्म का पहला लक्षण यह है कि वो ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकृत करता हो। अर्थात् कोई धर्म तभी विज्ञान मूलक हो सकता है, जब उसके विचार और शिक्षा की नींव किसी अति प्राकृतिक ईश्वरीय सत्ता पर नहीं, बल्कि नेचर मूलक सत्यों पर आधारित हो।

महान वैज्ञानिक और विकासवादी प्रोफ़ेसर जूलियन हक्सले ने बड़ी ही सुन्दर और महत्वपूर्ण शब्दों में विज्ञानमूलक धर्म के विषय में अपनी आशा को प्रगट किया है:– "I am sure that the world will see birth of a new religion... just how it will develop and flower no one knows, but .... its beliefs are not based on revelation of super natural sense but on the revelation of science and learning about man "

अर्थात् "मेरा पूर्ण विश्वास है कि संसार में एक नए धर्म का उदय होगा । वो कैसे विकसित होगा और उसका पुष्पित रुप क्या होगा, यह कोई नही जानता, परन्तु ....उसके विश्वास किसी अति प्राकृतिक (super natural) ईश्वरीय वाणी पर आधारित नहीं होंगे, बल्कि ज्ञान और विज्ञान द्वारा मनुष्य के संबंध में उद्घटित सत्यों पर आधारित होंगे।"

देव धर्म की शिक्षा में ईश्वर का कोई स्थान नहीं है, बल्कि उसमें विज्ञान का ही पूर्ण समादर है। देव धर्म प्रवर्तक देवात्मा ने अपनी खोज में ईश्वर के विश्वास को मिथ्या जानकर त्याग दिया था और अपने सत्य धर्म की बुनियाद विज्ञान की ठोस जमीन पर रख दी। देव धर्म प्रवर्तक ने फरमाया है:– "ईश्वर विश्वास मूलक सारी बुनियाद नष्ट हो गई। सत्य ज्ञान के अनुसन्धाान में अब अन्ध विश्वास का कुछ दखल न रहा। विज्ञान विषयक अनुराग के सर्व्वांग रूप से विकसित हो जाने से सत्य ज्ञान के

अनुसन्धाान में वैज्ञानिक विधि का मुझ पर पूर्ण अधिकार हो गया। वैज्ञानिक पूर्ण विधि के अनुसार जो ज्ञान सत्य प्रमाणित हो, वही ग्रहणीय रह गया। प्राचीन या नवीन, प्रचलित या अप्रचलित आप्त या अनाप्त, स्वदेशीय या विदेशीय आदि के विचार से कोई बात विश्वसनीय न रही। किन्तु जो कुछ वैज्ञानिक पूर्ण विधि के द्वारा अनुमोदित और समर्थित हो, वही सत्य ज्ञान ग्रहणीय और उसी को ग्रहण करना और प्राप्त करना मेरा सार लक्ष्य बन गया।"

सत्य धर्म वा विज्ञान मूलक धर्म का दूसरा लक्षण यह है, कि उसमें संदेह, प्रश्न, वा तर्क का स्थान हो। परम्परागत धर्मों में संदेह, प्रश्न वा तर्क को निषिद्ध मानकर केवल आस्था, श्रद्धा, वा स्वीकृर्ति की ही बात की जाती है। धर्म विश्वासों पर आधारित है और उनके अधिकतर विश्वास मिथ्या हैं। अगर उन पर कोई तर्क या प्रश्न करेगा, तो धर्म की हकीकत खुल जाएगी । जब-जब संदेह, तर्क, प्रश्न वा विज्ञान ने धर्म में प्रवेश करना चाहा, तब-तब पुरोहितों, मौलवियों और पादरियों आदि मजहब के पक्षपातियों में खलबली मच गई और उन्होंने कहना शुरु किया कि यह कब हो सकता है कि पहले बजुर्ग जो कह चुके है, वह ठीक न हो। इसीलिए धर्म में प्रश्न, संदेह, या तर्क का कोई स्थान नहीं है। जबकि देव धर्म विज्ञान की तरह अपने विश्वासों, मतों और शिक्षा पर तर्क, प्रश्न व संदेह की आज्ञा देता है और विज्ञान के नए रुप और रंग में अपने आप को परिवर्तित कर लेने की जोरदार आज्ञा देता है।

देव धर्म प्रवर्तक ने अपने ग्रंथ 'देव शास्त्र दूसरे खंड' में अपने अनुयायियों को यह आदेश दिया है कि यदि उनकी कोई शिक्षा विज्ञान की कसौटियों के अनुसार ठीक प्रमाणित न हो, तो वह भी सत्य मानने के योग्य नहीं।

उन्होंने इसी ग्रथ में फरमाया है- "इस पृथ्वी के मनुष्य जगत में इस विषय में जो बहुत बड़ी कठिनाई रही है और है, वह यह है, कि विविध सम्प्रदायों के करोड़ों लोग जैसे पहले इन कसौटियों का कोई ज्ञान न रखते थे, वैसे ही वह अब भी नहीं रखते, और न वह बतलाने पर ही अपने-अपने विश्वासों वा धर्म मतों की परीक्षा करने वा कराने के लिए तैयार पाए जाते हैं । वह इन विषयों में मिथ्या के इतने अनुरागी बन चुके हैं, कि वह सत्य को चाहते ही नहीं।"

देव धर्म का परम्परागत पुराने वा नए धर्म मतों की न्याई विज्ञान के साथ कोई युद्ध नहीं हैं, बल्कि देव धर्म विज्ञानमूलक धर्म है। इसमे ईश्वर का कोई स्थान नहीं है। इसकी बुनियाद नेचर के ऊपर खड़ी है। यह विज्ञान की न्याईं प्रश्न करने की आज्ञा देता है। इसलिए देव धर्म विज्ञान मूलक होने के कारण सारी दुनिया के लिए एक मात्र सच्चा धर्म है।

सुखी होने के उपाय

राक फ़ैलर का नाम बहुतों ने सुना होगा। आप अमेरिका के करोड़पति हो गुजरे हैं। 33 वर्ष की आयु में उन्होंने दस लाख डालर इकट्ठे कर लिए थे। 43 वर्ष की आयु में उन्होने दुनिया की सब से बड़ी तेल की कम्पनी बना ली थी, जिससे लाखों रुपये की आमदनी होती थी। जब उनको कुछ आमदनी हो जाती थी, तो वह खुशी में नाचने लग जाते थे, और जब कुछ घाटा पड़ जाता था, तो बिमार होकर चारपाई पर पड़ जाते थे। एक बार डेढ़ सौ पौंड का घाटा पड़ गया, तो वह चारपाई पर पड़ गए। रात दिन रुपये कमाने की फ़िकर में लगे रहते थे। न सैर, न व्यायाम, न खेल कूद, न हंसी, न किसी से मिलना जुलना। वह चाहते थे, कि लोग मुझ से प्रेम करें, लेकिन उनको सब घृणा करते थे, उनका एक भाई था, जो उनका मुंह तक नहीं देखना चाहता था। वह अपने कारखाने के कर्मचारियों से डरते रहते थे। बहुत से मनुष्य चाहते थे, कि राक फ़लर हमें मिल जावे, तो हम उसे जान से मार डालें। एक दफ़ा लोगों ने उसके बुत को फांसी देकर अपने दिल को शांत किया था।

वह इस सब की कुछ परवाह न करते थे। परन्तु कब तक परवाह न करते। जो विकास के नियम का साथी नहीं बनता, विनाश का नियम उसको समाप्त कर देता है। उनको कई शारीरिक लोगों ने घेर लिया। 53 वर्ष की आयु में उनका यह हाल था, कि उन को रात को नींद नहीं आती थी, न खाना हज़म होता था। दस लाख डालर प्रति सप्ताह कमाने वाला राक फैलर अपनी खुराक पर दो डालर प्रति सप्ताह भी खर्च नहीं कर सकता था। चन्द बिस्कुट और कुछ, फाड़ा हुआ दूध मुश्किल से हज़म होते थे। उनके कंधे झुक गए, आंखों की पलकें झड़ गई। उनके शरीर की खाल की रंगत मुर्दा हो गई। डाक्टरों ने उनको कह दिया, कि अब आपका आखिरी समय आ गया है। दुनिया के सबसे अमीर आदमी का जीवन सचमुच तरस के योग्य था। अब तक राक फैलर मृत्यु के नियम पूरे करता रहा था। अब उसने जीवन के नियम पूरे करने आरम्भ किए। उसने पौधों की सेवा करनी शुरू की, गोलफ़ खेलना शुरू किया, वह गीत गाने लगा। उसने सोचना शुरू किया कि मैं अपने रुपए को दूसरों की भलाई में किस तरह खर्च कर सकता हूं। उन्होंने एक छोटे से कालिज को लाखों रुपए दान देकर उसको शिकागो विश्वविद्यालय का रूप दे दिया। अमेरिका के हबशियों की सहायता की, कई रोगों को दूर करने में जो डाक्टर खोज में लगे हुए थे, उनकी लाखों रुपए से सहायता की। Rock Feller Foundation नाम की एक संस्था की बुनियाद डाली, जिसका लक्ष्य ही यह है, कि बीमारियों और अविद्या को दूर करने में लाखों रुपए खर्च करे। वह राक फैलर जिसको 53 वर्ष की आयु में डाक्टरों ने यह कह दिया था कि बस अब तुम मर जाओगे, वह 95 वर्ष तक की आयु तक जीते रहे। परोपकार में उनके दु:खी जीवन को सुखी जीवन में परिवर्तित कर दिया था।

एक जन की आँख खराब हो गई थी। यहाँ तक, कि एक वर्ष के भीतर-भीतर उनकी आँख के 12 आप्रेशन हुए। ऐसा जन जैसे फ़िकरों और दुखों का शिकार हो सकता है, उसकी कल्पना की जा सकती है। परन्तु यह जन हस्पताल में चारपाई पर पड़े-पड़े डाक्टरों का उपकार स्मरण करते रहते थे, और यह कहते रहते थे, कि विज्ञान ने बड़ी उन्नति की है, जो आँख जैसी नाज़ुक चीज़ का आप्रेशन कर देते हैं। जब उनको कहा गया, कि आपको प्राइवेट वार्ड में दाखिल करा देते हैं, वहां आप अकेले आराम से रहेंगे, तो उन्होंने ने कहा, कि मुझे जनरल वार्ड में रखें। वहां उनके इर्द गिर्द और भी बहुत से रोगी चारपाइयों पर पड़े थे। उनके दु:खों को देखकर वह अपने दु:ख को

सहन करने की कोशिश करते रहते थे और कहते रहते थे, कि मुझ से भी अधिक दुःखी लोग हैं। मैं उनके लिए क्या कर सकता हूं। गुण चिन्तन, उपकार स्मरण और हमदर्दी ने उनको अपने दुःखों को सहने की सामर्थ्य प्रदान कर दी।

लौंग फ़ैलो अंग्रजी साहित्य के बहुत बड़े कवि हुए हैं, उनकी धर्म पत्नी मोमबत्ती जला रही थी, कि उनके कपड़ों को आग लग गई और वह बिचारी जल कर मर गई। लौंग फैलो अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते थे। ऐसा प्रतीत होता था, कि वह उसकी जुदाई के सदमें को सहन न कर सकेंगे। उनकी पत्नी अपने पीछे तीन छोटे-छोटे बच्चे छोड़ गई थी। उन बच्चों को लौंग फ़ैलो सैर कराने के लिए ले जाते, उनको कहानियां सुनाते, उनके साथ खेलते, और उनकी कई और आवश्यकताओं को पूरा करते। उन्होंने अपने बच्चों को दिल बहलाने के लिए कविताएं लिखीं। यह कविताएं अब और भी कितने ही बच्चों को पढ़ने के काम आ रही हैं। इस सब संग्राम में गुज़रने से वह अपनी पत्नी की जुदाई के दुःख को भूल गए। वरना अगर वह हर समय अपनी पत्नी को याद करते रहते और अपने दिल को किसी और तरफ न लगाते, तो शायद आत्म-घात करके मर जाते। फ़िकरों और चिन्ताओं से बचने का एक उपाय यह है, कि मनुष्य अपने आप को किसी सेवा के काम में व्यस्त रखे। दूसरे विश्वव्यापी युद्ध में जब किसी ने चर्चल से पूछा, कि आपको तो मारे फ़िकर के नींद नहीं आती होगी, तो उन्होंने कहा, कि मैं इस क़दर व्यस्त रहता हूं, कि मुझे फ़िकर करने का समय ही नहीं मिलता।

एक जन बड़ा धनी था। वह बहुत बिमार रहता था। डाक्टरों ने उसे कहा, कि अब तुम शीघ्र मर जाओंगे। उसने झटपट अपनी वसीयत लिखवाई और अपनी वसीयत में यह भी लिखवाया, कि मेरी लाश मेरे घर के पास मेरे खेत में दफ़न की जावे। उसने कहा, कि अब मर तो जाना ही है, चलो दुनियां की सैर कर आवें। उसने अपने साथ लकड़ी का बक्स लिया और कहा, कि यदि मैं रास्ते में मर जाऊं, तो मुझे इस लकड़ी के बक्स में बर्फ के साथ बन्द करके मेरी लाश को वापिस मेरे घर भेज दिया जाए। वह जहाज़ में टहलते रहते थे और गाना गाते रहते थे, उन्होंने साथियों के साथ एक या दूसरा हलका खेल खेलना शुरू किया। नाना सुन्दर दृश्यों को देख-देखकर खुश होते थे। धीरे-धीरे उनकी सेहत बेहतर होने लगी। जब वह वापिस चक्कर लगा कर आए, तो उनका वज़न 90 पौंड बढ़ गया था। उस लकड़ी के बक्स को तो उन्होंने रास्ते से ही वापिस घर को खाली भेज दिया था। यदि वह यही चिन्ता और जाप करते रहते कि अब मैं मर जाऊंगा, मुझे कोई नहीं बचा सकता, तो वह अवश्य ही मर जाते और उनकी लाश रास्ते से ही लकड़ी के बक्स में बंद होकर वापिस आती। परन्तु उन्होंने अपने आप को विनाशात्मक विचारों से निकाल कर रचनात्मक विचारों में लगा दिया, जिसका यह असर हुआ, कि वह बच गए। ऊपर लिखे दृष्टांतों से हम यह नतीजा निकाल सकते हैं कि फिक़रों, चिन्ताओं और दुखों से बचने के लिए :

(1) मनुष्य अपनत्व से निकल कर कुछ न कुछ किसी की सेवा करे।

(2) यह सामने लावे कि मैं भी दुखी हूं, लेकिन दुनियां में मुझ से भी अधिक दुखी हैं। हो सकता है आप के पास जूते नहीं, लेकिन आप के पड़ोस में एक आदमी रहता है, जिसके टांगे भी नहीं हैं।

(3) उपकारियों के उपकार स्मरण करें। किस-किस से क्या-क्या सेवाएं पाई हैं?

(4) अपने आपको एक या दूसरे काम में इतना व्यस्त रखें कि चिन्ता फ़िकर करने का समय ही न मिले

(पी. वी. कनल)

दूध की गंगा

पेय पदार्थों में दूध का महत्त्व हर किसी को पता है। यह हर उम्र के लोगों के लिए लाभकारी होता है। दूध केवल पीने के ही काम नहीं आता बल्कि इस से तमाम तरह की मिठाइयां, पनीर और खोया आदि भी बनता है। शहरों में दूध की खपत बढ़ती जा रही है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में ही हर रोज 20 से 25 लाख लिटर दूध की जरूरत होती है। यहां बड़े पैमाने पर आसपास के शहरों सीतापुर, रायबरेली, हरदोई, उन्नाव, बाराबंकी, सुल्तानपुर, अमेठी, लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा, बस्ती और बलरामपुर से दुधिए अपना दूध बेचने आते हैं। दूधिए अपना दूध 35 से 40 रूपए प्रति लिटर की दर से बेचते हैं जबकि ब्राडेड कंपनियां 40 रूपए से 50 रूपए प्रति लिटर के हिसाब से अपना दूध बेचती हैं।

दूध के दामों में 1 रूपए की बढ़ोतरी होने पर ग्राहकों को लगता है कि उन पर बड़ा बोझ आ पड़ा है। सही माने में देखें तो ग्राहकों की यह सोच सही भी है। लेकिन ग्राहकों की यह समझ तब पता नहीं कहां चली जाती है जब वे अपने खूनपसीने की कमाई से जुटाए पैसों से महंगा दूध खरीद कर मूर्तियों पर चढ़ाते हैं, जहां से वह नालियों मे बह कर बरबाद हो जाता है। पैसे की बरबादी के साथ, यह दूध जैसे पौष्टिक आहार का अपमान भी होता है।

एक तरफ पूरे देश में खाद्यान्न की बरबादी को रोकने का अभियान चल रहा है तो दूसरी ओर मूर्तियों पर दूध चढ़ा कर उसे बरबाद किया जा रहा है। शिवमंदिरों में शिवलिंग को नहलाने में दूध का प्रयोग पूर साल किया जाता है लेकिन फरवरी मार्च के दौरान फाल्गुन में मनाई जाने वाली शिवरात्रि और जुलाई अगस्त के दौरान सावन में प्रत्येक सोमवार को शिवलिंग को नहलाने में दूध की ज्यादा जरूरत पड़ती है। इस कारण इन महीनों में दूध की यह खपत दोगुनी से भी अधिक हो जाती है।

<u>बहता है 2 करोड़ रुपए का दूध</u>

दूध कारोबार से जुड़े रामप्रसाद यादव कहते हैं, "शिवरात्रि के दिन दूध सामान्य दिनों से ज्यादा महंगा हो जाता है। ऐसे में दूध में मिलावट का सहारा ले कर खपत को पूरा किया जाता है। केवल लखनऊ की बात करें तो उस दिन 10 लाख लिटर अतिरिक्त दूध की जरूरत होती है।"

अगर इस की कीमत 20 रूपए लिटर के हिसाब से भी लगाएं तो लगभग 2 करोड़ रूपए का दूध केवल लखनऊ में मूर्तियों पर चढ़ा दिया जाता है। ऐसा केवल लखनऊ में ही नहीं किया जाता, देश के छोटेबड़े सभी शहरों और गांवों में भी किया जाता है। यानी श्रद्धा के नाम पर दूध की बरबादी।

उस दिन गांव और छोटे शहरों से लखनऊ ला कर दूध बेचने वाले दूधिए नहीं आते क्योंकि उन के दूध की खपत गांवों में ही हो जाती है। शहर में दूध की खरीदारी करने वाले लोग दूध की शुद्धता देख कर दूध लेते हैं जबकि शिवलिंग पर दूध चढ़ाने वालों को इस से मतलब नहीं होता कि दूध में कितनी मिलावट है। चाहे जैसा दूध हो, वे खरीद लेते हैं।"

दूध के बाजार में न आने से दूध से जुड़े दूसरे उत्पाद भी महंगे हो जाते हैं। सब से खास असर पनीर और खोये के बाजार पर पड़ता है। खोया बेचने वाले

दिनेश यादव कहते हैं, "दीवाली के बाद सब से महंगा खोया शिवरात्रि में बिकता है। पहले गांवों में लोग दूध के लिए जानवर पालते थे। अब बहुत सारे घरों में दुधारू जानवर न के बराबर रह गए हैं। ऐसे में वे लोग भी खरीद कर ही दूध शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। गांव के लोगों में संपन्नता बढ़ने के साथ साथ धार्मिक खर्चों में भी उन की रुचि बढ़ी है जिस के कारण ऐसे अवसरों पर दूध व उस से जुड़े अन्य उत्पादों पर असर पड़ने लगा है।

पैकेट वाले दूध का चढ़ावा

सामान्य दूध को शिवलिंग पर चढ़ाने के लिए कुछ लोग लोटे के पानी में दूध मिला कर मूर्तियों पर चढ़ाते हैं। कुछ अमीर किस्म के भक्त दूध में पानी मिला कर चढ़ाने को गलत मानते हैं। वे दूध में नाममात्र के लिए गंगाजल मिला कर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। इस में बेल, बेलपत्र, धतूरे, बेर और गेहूं की बाली भी शामिल होती हैं।

शहरों में तमाम लोग इधर से उधर जाने की भागदौड़ में लगे रहते हैं, ऐसे में लोटा और उस में खुला दूध डालने की परेशानी अलग होती है। इस से बचने के लिए वे लोग पैकेट में बिकने वाले दूध का सहारा लेते हैं। मंदिरों में ऐसे भक्तों को देखा जा सकता है जो दूध को प्लास्टिक के पैकेट से सीधा शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। ये लोग 200 ग्राम से ले कर 500 ग्राम तक के पैकेट का प्रयोग करते है। दूध चढ़ावे के इस बदले रंग के चलते इस दिन शहरों में पैकेट वाला दूध भी कम हो जाता है। बहुत सारे जरूरतमंद दूध से वंचित रह जाते हैं।

केवल दूध की बात नहीं, शिवलिंग पर चढ़ाने के लिए गेहूं की बाली, बेल, बेलपत्र का इस्तेमाल भी किया जाता है जिस से बड़ी संख्या में इन चीजों को तोड़ कर बाजार में बेचा जाता है। मंदिरों के पास बनी दुकानों में इसे पूजा सामग्री के नाम से बेचा जाता है। इस की कीमत 11 रूपए से 21 रूपए तक होती है। इस के अलावा शिवलिंग के पास एक दानपात्र अलग से रखा होता है जिस में 11 रूपए से 101 रूपए तक का दान डाला जाता है।

धर्म के नाम पर होने वाले खर्च लगातार बढ़ रहे हैं। पहले यह सोचा जाता था कि शिक्षा के साथ ही साथ धार्मिक आस्था और अंधविश्वास कम होगा। लेकिन सही माने में शिक्षित हो चुके, खासतौर पर युवा वर्ग तेजी से इस धार्मिक अंधविश्वास की तरफ बढ़ता जा रहा है। अब ऐसे खर्चों को लोग अपने रुतबे से जोड़ कर भी देखने लगे हैं। जिस के चलते लोग ज्यादा से ज्यादा पैसा खर्च करने का प्रयास करते हैं।

जागरूकता की जरूरत

सामाजिक विचारक रामचंद्र कटियार कहते हैं, "जिस तेजी से धर्म का प्रचार हो रहा है उस तेजी से धार्मिक अंधविश्वास का विरोध नहीं हो रहा है। कुछ बड़े लोग और नेता भी इस धार्मिक अंधविश्वास पर इतना यकीन करते हैं कि उन्हें देख कर छोटे लोग यह समझते हैं कि अंधविश्वास के कारण ही वे बड़े हैं। ऐसे में वे भी उन की तरह ही पूजापाठ में लग जाते हैं।

पूजापाठ में लोग अच्छी अच्छी बातें करते जरूर हैं पर उस पर अमल नहीं करते हैं। हर मंदिर में यह नोटिस बोर्ड भी लगा होता है कि चोर उचक्कों से सावधान। कई बार तो मूर्तियां तक चोरी हो जाती हैं। कहने का मतलब यह है कि धार्मिक आस्था वाली जगहों पर भी बड़ी संख्या में घटती ऐसी घटनाएं साफ इशारा करती हैं कि हमारी मानसिकता क्या व कैसी

है?"

गांव में रहने वाले छोटी बिरादरी के लोग अपने को बड़े लोगों के बराबर करने की होड़ में धार्मिक कामों से जुड़ रहे हैं। वे भले ही अपने बच्चों को स्कूल भेजने का खर्च न उठा पाते हों लेकिन मंदिरों में होने वाली पूजा और कथा में चढ़ावा जरूर चढ़ाते हैं। उन को लगता है कि ऐसे काम कर के वे बड़े लोगों की बराबरी कर लेंगे। कई बार तो इन लोगों को यह भी नहीं पता होता कि धार्मिक कथा के माध्यम से क्या समझाया जा रहा है। इस के बाद भी वे बिना कुछ सोचेसमझे उस पर ताली बजाते रहते हैं। इस तरह की हालत से बाहर निकलने के लिए जागरूकता अभियान ही रामबाण साबित हो सकता है।

सही माने में धर्म और उस से जुड़े धार्मिक काम महंगे और खर्चीले होते हैं। कई बार तो ये खाद्य पदार्थ और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले भी होते हैं। इस खर्च का कम करने ओर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने से बचाने के लिए आप को ही कुछ करना है। तरक्की और संपन्नता के लिए पूजापाठ नहीं मेहनत की जरूरत होती है। जो खर्च आप ऐसे कामों में करते हैं वही खर्च अगर आप अपने घरपरिवार पर करेंगे तो वह ज्यादा खुशहाल और संपन्न हो सकेगा।

-सरिता के सन्दर्भ से)

सेवकों के सुन्दर दृष्टांत

अमानत के पैसे मैं रख नहीं सकता

कोकरी कलां के एक साधु का ज़िकर है, कि वह परलोक सिधार गया। जिस धर्मशाला में वह रहता था वह बहुत पुरानी हो चुकी थी, इस लिये पंचायत ने उसे नए सिरे से बनाने का फ़ैसला किया, और प्रत्येक परिवार को कहा गया, कि वह अपने घर की संख्या के अनुसार पैसे धर्मशाला के लिए अदा करे। पंचायत में बहुत सारे जन बैठे हुए थे। जब एक देव समाजी ने अपना हिस्सा पेश किया और अपने हिस्से के पैसे देने के अतिरिक्त इस सेवक ने पंचायत के सामने 80 रू० और रखे तो पंचायत वाले हैरान होकर पूछने लगे कि यह रुपए कैसे है? तब उस सेवक ने बताया, कि यह रुपए तो उस साधु ने मेरे पास अमानत में रखे थे, जिस का पता किसी और को नहीं था। उसका पता मुझे था या साधु को था, परन्तु यह अमानत के पैसे मैं अपने पास नहीं रख सकता और इसीलिए मैं पंचायत से निवेदन करता हूँ, कि वह पैसे ले ले। उपरोक्त जन इस सुन्दर दृश्य को देखकर हैरान रह गये। वह भली भांति जानते थे, कि साधु ने औरों के पास भी अमानत रखी थी परन्तु बहुत सारे जन वह अमानत खा गये। इस जन का यह दृष्टांत कि उसने अमानत के पैसे ऐसी सूरत में वापिस किये, जब कि किसी और जन को अमानत का पता नहीं था और जिसके लिये कोई लिखत पढ़त नहीं थी, बहुत ही प्रशंसनीय बात है। भगवान देवात्मा की आत्मिक फुलवाड़ी में ऐसे फूल पैदा होते ही रहे हैं और पैदा होते रहेंगे। फिर भी इस दृष्टांत ने देव समाज के गौरव को बहुत बढ़ाया है। यह जन विशेष सन्मान और श्रद्धा के योग्य श्री देवत्व सिंह

जी के छोटे भाई श्री० धर्म सिंह जी थे।

थानेदार साहिब! देव समाजी के घर में मांस नहीं पकेगा

श्रीमान् सुच्चा सिंह जी कोहारवाला के जीवन की एक विचित्र घटना है। वह देव समाज के अच्छे उत्साही और होनहार सेवक थे। एक बार वह कहीं खेती के काम पर गए हुए थे, जब वह बाहर से घर में वापिस आए और ज्योंही अपनी बैठक में गये, त्योंही वह क्या देखते हैं, कि एक चूल्हे पर हांडी चढ़ी हुई है और मसाला खूब घोटा जा रहा है। उन्होंने पूछा कि यह क्या हो रहा है, तो पुलिस वाले ने बताया, कि थानेदार साहिब के लिये मुर्गा तैयार हो रहा है। श्री सुच्चा सिहं जी ने उससे बहुत चोट खाई और उन्होंने कहा-तुम्हें पता नहीं, कि मैं देव समाजी हूं। उनको उत्तर मिला कि देव समाजी हो तो फिर क्या है, यह मुर्गा थानेदार साहिब के लिए तैयार हो रहा है। श्री सुच्चा सिंह जी ने ज़ोर से कहा, कि देव समाजी के घर में मुर्गा नहीं पकेगा, चाहे कोई थानेदार हो, चाहे बादशाह। इस पर पुलिस वालों ने उत्तर दिया, कि हम लोग तो कई ब्राह्मणों के घर में भी बना लेते हैं, आप अगर कहेंगे, तो हम बाद में पोचा दे जाएंगे। तब श्री सुच्चा सिंह जी ने जोश से भर कर कहा, कि अगर कोई कहे कि गाय को कत्ल करके तुम्हारे घर पकाएंगे, और बाद में पोचा दे देंगे तो कौन हिन्दू इसे पसन्द करेगा? मैं इसे वैसे ही बुरा ख़्याल करता हूं। इस लिए यहां से हांडी उठानी ही होगी और वह हांडी उठाई गई। श्री सुच्चा सिंह जी की हिम्मत और हौसले का तभी अनुभव हो सकता है, कि जब किसी को ऐसी परीक्षा में से गुजरना पड़े, क्योंकि वह छोटे ज़मीदार थे और खुद काश्त करते थे, और ऐसे जनों पर पुलिस का जो अधिकार है, बहुत भयंकर है, परन्तु -

"सच्चे गुरु का बालका, मरे न मारा जाय"

इस लिए श्री सुच्चा सिंह जी अपनी सेवकी की प्रतिज्ञाओं से विमुख नहीं हो सकते थे और अपनी प्यारी और हितकारी देवसमाज के गौरव को बट्टा नहीं लगा सकते थे और सत्गुरू के दरबार के लिए हर प्रकार के बलिदान देने के लिये हर समय तैयार रहते थे। श्री सुच्चा सिंह जी अपने इस एक दृष्टान्त से ही देव समाज के गौरव को बढ़ाने वाले प्रमाणित हुए।

उन लोगों के प्रति अच्छे बन जाए जो हमारे प्रति अच्छे नहीं हैं!

इन दिनों मैंने 'दूधवाला' फ्लाइट लेनी बंद कर दी है, जो अलसुबह दूध बांटने वालों के समय रवाना होती है। ऐसा इसलिए क्योंकि सुबह एयरपोर्ट पर भारी भीड़ होती है और सोशल डिस्टेन्सिंग नामुमकिन हो जाती है। इसकी जगह खासतौर पर कोविड के बाद से मैंने 'बूथवाला' फ्लाइट लेनी शुरू कर दी है, जो कि मुझे गंतव्य पर लगभग आधी रात को ले आती है। घर जाने वालों को छोड़कर बिजनेस यात्री ऐसी फ्लाइट नहीं लेते क्योंकि उन्हें उस शहर में एक रात होटल में गुज़ारने के लिए अतिरिक्त पैसा चुकाने पड़ते।

2 अप्रैल की रात ऐसी ही एक 'बूथवाला' फ्लाइट पकड़ने मैं मुंबई एयरपोर्ट पहुंचा। चूंकि कोविड तांडव मचा रहा है, ऐसे में एयरलाइन व एयरपोर्ट कर्मचारी न सिर्फ सतर्क थे बल्कि यात्रियों को मास्क पहनने व प्लास्टिक की थैलियों में दी गई शील्ड पहनने क लिए सख्ती कर रहे थे, साथ ही थैली में उड़ान के दौरान इस्तेमाल के लिए सैनिटाइजर्स के 5-6 पाउच भी दिए गए थे। कोविड काल के नियमों के मुताबिक बीच वाली सीट पर बैठने वाले सभी यात्रियों को पूरी बॉडी किट पहनना और खिड़की एवं गलियारे की सीट वालों को मास्क लगाना ज़रूरी है।

विमान के लिए प्रस्थान करने वाला मैं आखिरी यात्री था। 200 फुट के पूरे एयरोब्रिज पर मुझसे पहले गए यात्रियों के फेंके खाली प्लास्टिक बैग देखकर मैं चकित था। अगर यह दृश्य किसी भी कैमरे में कैद हुआ, तो ये पलभर में देश की छवि धूमिल कर सकता है, क्योंकि पहली बात तो उन सुंदर गलीचों पर कोई भी ऐसा कूड़ा नहीं फेंकता है वो भी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर। इस दृश्य के बावजूद मैं खुश था कि चलो कम से कम यात्री मास्क पहने हैं, जो कि अनिवार्य था। पर मैं गलत था। जब मैं विमान के अंदर पहुंचा, सात यात्री इस पर तर्क कर रहे थे कि तीनों सीटों पर एक ही परिवार के लोग हैं, इसलिए बीच वाली सीट पर बैठने वाले की बॉडी किट की जरूरत नहीं है। और एक परिवार ने तो गुस्से में तर्क करना शुरू कर दिया कि वे चूंकि एक ही घर से आए हैं, अपने घर पर कभी मास्क नहीं पहना, इसलिए उन्हें यहां भी मास्क नहीं पहनना। जब उन्हें मनाने के प्रयास विफल हो गए, तब वरिष्ठ परिचालक दल (क्रू) ने उन्हें कहा कि वे उन्हें 'नियम न मानने वाले यात्री' घोषित कर रहे हैं और उन्हें तुरंत विमान से उतरना होगा। तब जाकर उस परिवार ने किट पहनी, जिसकी थैली वे पहले ही फेंक चुके थे।

क्रू की यात्रियों से कम से कम बातचीत के नियम के बावजूद ये खिन्न परिवार बार बार घंटी बजाकर क्रू को कभी पानी तो कभी कुछ और के लिए बुला रहा था। क्रू वाकई परेशान हो रहा था। मैं देख रहा था कि उनकी पूर्ति करने के बाद हर बार उनकी देहभाषा गुस्से से भरती जा रही थी। उन्होंने यात्रियों को कोविड के निए नियमों से भी डराया, जिनका वे पालन नहीं कर रहे थे। तब मुझे अहसास हुआ कि गुस्से की प्रतिक्रिया में दिखाया गुस्सा और क्रोध बढ़ाता है। बुरे के बदले बुरा सिर्फ और बुरा ही होता है। जिंदगी में दो नकारात्मक एक सकारात्मक नहीं बनाते। तब जाकर मैंने हताश क्रू में से एक को कहा कि 'दुर्योधन से मुकाबला करने के लिए हमें दुर्योधन बनने की जरूरत नहीं। बल्कि अर्जुन बनकर आप दुर्योधन से जीत सकते हैं। मायने ये नहीं रखता कि दूसरे हमारी अच्छाई के लायक हैं या नहीं, बल्कि अहम ये है कि अपने दिल में हम कुछ बुरा नहीं चाहते।' क्रू अपनी बात पर टिका रहा, पर उड़ान का अनुभव सुखद बनाते हुए हल्का महसूस कर रहा था।

फंडा यह है कि कि उन लोगों के प्रति अच्छे बन जाएं, जो हमारे प्रति अच्छे नहीं हैं। हमे परेशान करने वालों की तरह बनने के बजाय अगर हम अपनी अच्छाई पर कायम रहें, तो अपने लिए शांति बनी रहेगी।

(एक अनुभव)

वर्तमान भविष्य के लिए ख़तरा

हमारे देश का वर्तमान इतना धुंधला गया है कि भविष्य में क्या होगा, इस कल्पना से भी दिल कांप उठता है। संसारिक सुखों, पदों की प्राप्त करने के लिए जो 2 हथकण्डे रचे जाते हैं, जो झूठे लालच दिए जाते हैं, वह हमारी अन्ध भक्त जनता को पागल बनाने के लिए काफी हैं। मंहगाई के बढ़ने से जनता त्राही त्राही कर रही है, परन्तु कहते हैं, "राजा को सुनता नहीं" यह बात सच है। हमारे अन्न दाता 4 महीने से सड़कों पर हैं, परन्तु हमारे नेता चुनाव की रैलियों में मदमस्त है। ऐसा लगता है कि राजनीति मनुष्यों के हृदयों को पत्थर बना देती है।

एक ओर गरीब भूखे मर रहे हैं, बहुत मर भी गए हैं, परन्तु दो बड़े घराने फल फूल रहे हैं। कल के अर्थात् 10 अप्रैल के दैनिक भास्कर में छपा था कि 2014 से लेकर 2021 तक अडानी सम्पत्ति 230 गुणा बढ़ी है। करोना काल में जहां सब बड़ी 2 कंपनियां डगमगा रही थी, अडानी ने सबसे अधिक 10 गुणा कमाई की। केवल 2020 में उन्होंने, डेड़ लाख करोड़ रुपये अपनी सम्पत्ति में जोड़े। जबकि अडानी समूह की आर्थिक अवस्था पहले से इतनी अच्छी नहीं थी। 2010-2012 के दौरान अडानी ग्रुप 70% मार्केट कैप खो चुका था। 2012 में उस पर फेमा का उल्लघंन, कोयला खदानों का ग़ल्त इस्तेमाल, कस्टम डयूटी की चोरी के आरोप थे, उसके भाई को हिरासत में भी लिया गया? 2018 में गुजरात में अडानी पावर का एक प्रोजेक्ट दिवालिया होने की कगार पर था, उन्होंने अपने आपको दिवालिया घोषित करने का मन बना लिया था। परन्तु तत्कालीन गुजरात सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के विरुद्ध जाकर अडानी पावर को ज्यादा दरों पर बिजली बेचने की अनुमति दे दी, वह प्रोजेक्ट दिवालिया होने से ही नहीं बचा उनको उनको इतने ठेके, एयर पोर्टस पर हिस्सेदारी दी गई। उनकी favour देने की लम्बी लिस्ट है। यह तीन काले कानून भी अडानी और अम्बानी को हमारी फसलों पर भी अधिकार दे रहे हैं, किसान समझ रहे हैं कि उनकी हैसीयत एक बन्धुआ मज़दूर की हो जाएगी।

यह हमारी राजनीति की एक कहानी है, पर जितने घोटाले, हमारे देश में होते हैं, जितना भृष्टाचार हमारे देश में है उसको देख सुनकर सिर शर्म से झुक जाता है। है तो राजनीति में हर देश में गन्दगी, परन्तु गरीबों की रोटी नहीं छीनी जाती। किसानों पर इतने जुल्म नहीं होते।

परन्तु यह केवल राजनैतिक लोगों का ही कसूर नहीं, बल्कि उनकी तरफ से खड़े किए गुण्डों को हम अपनी वोटों से जीत दिलाते हैं, हम भी उतने ही ज़िम्मेदार हैं। यदि हम ग़ल्त आदमियों को वोट न दें, तो वह भृष्ट नेता संसद वा विधान सभाओं में कैसे पहुँच सकते हैं? प्रत्येक पार्टी में दागी नेता खड़े किए जाते हैं, यदि उन्हें वोटें न डाली जाएं तो अगली बार पार्टियों को सोचना पड़ेगा।

चुनाव प्रचार में एक दूसरे पर दोष लगाने में गन्दी वा असभ्य भाषा का प्रयोग किया जाता है, नैतिकता की धज्जियां उड़ाई जाती हैं। नैतिक मूल्य क्या राजनीति में, क्या संस्थाओं में और क्या धार्मिक संस्थाओं में समाप्त हो रहे हैं। स्वार्थ के लिए घिनौने से घिनौने कर्म होते हैं। अंग्रेजों की गुलामी के लिए कितनी जाने कुर्बान हो गई, परन्तु आज हम भृष्ट नेताओं के गुलाम हो गए हैं। देशवासियों के लिए नियम बनाए जाते हैं। मास्क पहनो, 6 फीट की दूरी रखो, परन्तु स्वयं राजनैतिक लीडर, रैलियों द्वारा वा

कुम्भ वा अन्य धर्म स्थानों में लोगों को एकत्र होने की आज्ञा देकर उन नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। एक गरीब मास्क के बिना जा रहा है, तो उसे जुर्माना लगाया जाता है, परन्तु लाखों लोगों के इकट्ठे होने पर कोई पाबन्दी नहीं। हमारे नेताओं के दोहरे चरित्र से देशवासी परेशान हैं।

ऐसी पतित दशा में जन-जागरण की आवश्यकता है। जो अपराधी तत्व हमारे देश की राजनीति में, क्या हमारी धार्मिक संस्थाओं में, शिक्षा संस्थाओं में घुस गए हैं, उनसे सुचेत होने की आवश्यकता है। अन्याय, अनैतिकता, अभद्रता के विरुद्ध आवाज़ उठाने की आवश्यकता है।

किसी भी पद को प्राप्त करना चिकड़ी, चुपड़ी बातों वा कुछ लोगों के स्वार्थ को सिद्ध करके आसान है, परन्तु उस पद की प्रतिष्टा को क़ायम रखना उच्च चरित्र के बिना कठिन है। चापलूसी के द्वारा अवांछित तत्व पदों के अधिकारी बन जाते हैं, परन्तु व्यवहारिक जीवन में जब भलाई न करके, गरीबों की हाहाकार न सुनकर उनका पद केवल अपनी वा अपनों के स्वार्थ को सिद्ध करने का ज़रिया बन जाता है।

आज की ग़ल्तियों का परिणाम जनता भुगत रही हैं और भविष्य में भी भुगतेगी। ऐसी अवस्था उच्च चरित्रवान और उच्च आदर्श रखने वाले, निस्वार्थ रूप से जनता की भलाई करने वाले जनों की आवश्यकता है, 'ऐसे नेता जिन्हें निकट से निकट के जन भी प्रभावित न कर सकें, जो सचाई पर अडिग हों। ऐसा एक जन ही देश का रुख बदल सकता हैं और वह लाखों जनों से शक्तिशाली होता है। काश! हमारे देश को चरित्रवान नेता मिल सकें, जो मिथ्याओं, धार्मिक अडम्बरों से दूर रहकर देशवासियों की भलाई कर सकें।

आज के युग में दिल्ली के चीफ मनिस्टर इसका उदाहरण हैं। उनके भलाई करने के मार्ग में विरोधी पार्टी ने हर बात पर रुकावटें डाली, परन्तु अब उनका काम बोलता है, वह सरकारी स्कूल बोलते हैं, जिन्हें उन्हें केवल सुन्दर रूप ही नहीं दिया, बल्कि 95% से भी अधिक नतीजे दिखाए हैं। गली, मुहल्लों में मैडीकल क्लीनिक खोल दिए हैं। जहां सबको मुफ्त डाक्टरी परामर्श वा दवाई मिलती हैं, और क्या क्या सुविधाएं दे रहे हैं, वह अब दिल्ली वासी जानते हैं। उन्होंने कहा है कि मैं अपनी जेब से कुछ नहीं दे रहा, जनता का पैसा ईमानदारी से जनता पर लगा रहा हूँ। काश! हर स्टेट में ऐसे नेता मिल जाएं, तो देश का नक्शा बदल जाए और देश का भविष्य उज्जवल हो जाए। वर्तमान तो कंटक-मय भविष्य का संकेत है।

- सुरजीत बराड

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ GLOBAL

Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh

Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

अपना लक्ष्य बदलें

रौबिन शर्मा ने कई किताबें लिखी हैं, जिनमें से एक का हैडिंग है "Who will cry, when you die" अर्थात जब तुम इस संसार को छोड़ोगे, तो तुम पर कौन रोएगा।

उन्होंने लिखा है :-

जब मैं बड़ा हा रहा था, मेरे पिता ने मुझे कुछ कहा था जो मैं कभी नहीं भूल सकता (Son, when you were born, you cried while the world rejoiced, live your life in such a way that when you die the world cries while you rejoice") अर्थात जब तूँ आया जगत में, जग हंसे, तू रोए, ऐसी करनी कर चलो तूं हंसे जग रोए" यह दोहा हमने बहुत बार सुना है, परन्तु कुछ ऐसे अधिकारी जन होते हैं, जो मरते दम तक इस याद रखते हैं और अपनी जिन्दगी को उपयोगी बना कर इस संसार से जाते हैं।

आगे उन्होंने लिखा है कि अब हम आसानी से किसी मनुष्य को चांद पर पहुँचा सकते हैं, परन्तु हमारी गली में रहते किसी पड़ोसी को मिलने में कष्ट अनुभव करते हैं। हम बहुत निपुणता से मिसाईल से दुनिया के दूसरे देश तक निशाना साध सकते हैं, परन्तु अपने बच्चे को लाईब्रेरी तक ले जाने में दिक्कत महसूस करते है। हमारे पास email, fax मशीने, डिजीटल फोन, जिसके द्वारा हम दूसरों से सम्पर्क बनाते है, परन्तु विशाल मानव जगत से connected नहीं हैं। हम अपने इस दुनिया में आने के लक्ष्य से नाता खो बैठे हैं। हम उन चीज़ों को नहीं देखते जो अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

हम देखें कि इस धरती पर विचरते हुए, कितने जनों से आप सम्पर्क रखते हैं। आने वाली पीढ़ियों पर हमारा क्या प्रभाव पड़ेगा? जब तुम आखिरी साँस लोगे तो तुम कैसी विरासत छोड़ कर जाओंगे? दिन हफ्तों में बदल जाएंगे, हफ्ते महीनों में और महीने वर्षों में, बहुत जल्दी सब ख़त्म हो जाएगा, अधूरी जिन्दगी जीने का दुःख ही रह जाएगा। जार्ज बरर्नारड शाह को उनकी मृत्यु शैय्या पर किसी ने पूछा, "यदि तुम्हें जिन्दगी दुबारा मिले तो तुम क्या करोंगे" उन्होंने ठण्डा सांस भरकर जवाब दिया, "मैं ऐसा इन्सान बनना चाहूँगा, जो मैं बन सकता था, परन्तु नहीं बन सका।"

पाठकगण! यह दिन सब पर आएंगे, यदि हमारा वर्तमान समाज के लिए उपयोगी न बन सका, किसी का दुःख दर्द दूर न कर सके, किसी का आभाव निवारण न कर सके, स्वयं अच्छे इन्सान न बने और दूसरों को न बना सके, हमारे हाथों पशु, पौधे, भौतिक जगत और मानव जगत सुरक्षित न हुआ, चारों जगतों को पहले से सुन्दर रूप न दे सके। किसी उच्च लक्ष्य को लेकर न जी सके, अपनी कमियों, कमज़ोरियों से ऊपर न उठ सके, अपने भीतर कोई उच्च भाव पैदा न कर सके, तो हमें भी हाथ मलते, रोते ही इस संसार को छोड़ना पड़ेगा। यह विषय बहुत विचार का विषय है।

रौबिन शर्मा बड़ी 2 कान्फ्रैंसों का सम्बोधन करते हैं, अधिकतर बिजनैस और लीडरशिप पर उनके लैक्चर होते हैं, परन्तु पब्लिक की ओर से उन्हें अक्सर यह पूछा जाता है" हम जिन्दगी के महान अर्थ वा उद्देश्य को कैसे पा सकते हैं? हम अपने काम के द्वारा क्या योगदान दे सकते हैं? क्या करें जो अधिक देरी होने से पहले हम अपनी जिन्दगी की यात्रा को आनन्द-मय बना सकें।

उनके विचार में आप अपने अर्न्तआत्मा की आवाज़ को सुनें, तुम्हारे भीतर बहुत तरह की योग्यताएं हैं, उनके अनुसार अपनी ताक़त उपयोगी कामों में लगाओ, हमारा जन्म लेने का कोई उद्देश्य है। आप जो भी काम करते हो, उनको बेहतर से बेहतर ढंग से करो, दूसरों के बदलने का इन्तज़ार न करो, जिस प्रकार महात्मा गांधी जी ने कहा है, "अपने आपको बदलो जो तबदीली, तुम संसार में लाना चाहते हो, एक दफा अगर सब जन अपने आपको बदलेंगे, आपकी और दुनिया की जिन्दगी बदल जाएगी।"

यह विचार सब उन जनों के हो सकते हैं, जिनमें कुछ न कुछ सात्विकता है, कोई उच्च भाव हैं, परन्तु उनको यह समझ नहीं आ सकती कि जिन मनुष्यों में यह भाव नहीं वह चाहकर भी अपने आपको नहीं बदल सकते।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मनुष्य की इस समस्या का समाधान दिया है। सर्व प्रथम उन्होंने अधिकार तत्त्व को समझाया है कि किसी जन में सुधार वहां तक ही हो सकता है, जहां तक उसमें उस विषय की योग्यता है, फिर अगर उसे अनुकूल वातावरण न मिले तो वह योग्यता भी नष्ट हो जाती है। मनुष्य के भीतर की भाव शक्तियां ही उसका लक्ष्य निर्धारित करती हैं। स्वार्थी मनुष्य के लिए परोपकार को समझना ही कठिन है। एक नौजवान की पत्नी दूसरों की बहुत सहायता करती थी, परन्तु पति कहता हमने सुना है कि किसी मतलब के बिना कोई दूसरों की सहायता कैसे कर सकता हैं। अब ऐसे जन को परोपकारी बनाना असम्भव के करीब है।

जैसे रौबिन शर्मा ने लिखा है कि हम जाएं तो बेहतर दुनिया छोड़कर जाएं। परन्तु परम पूजनीय भगवान की रोशनी दिखाती है कि जब तक तुम अपनी भाव शक्तियों को नहीं जानते, जब तक तुम्हारे दिल दिमाग पर नीच वासनाओं, नीच सुखों और नीच घृणाओं का राज है, तब तक न तुम स्वयं बेहतर बन सकते हो न दूसरों को बेहतर बना सकते हो। जीवन का उच्च लक्ष्य बनाने के लिए उच्च भावों की आवश्यकता है। निस्वार्थ भाव की आवश्यकता है, जो प्रत्येक मनुष्य में सम्भव नहीं। मनुष्यों का लक्ष्य तो सुख प्राप्त करना है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते हैं :-

"क्या तुम इस बात से खुश होकर इस दुनिया से जाओगे कि जब आए थे तो 100 घुमाओं ज़मीन थी, अब सौ है। सरदार बन गए, खान बन गए?"

अधिकतर मनुष्य को सुख इसी में है कि वह अधिक से अधिक धन इक्ट्ठा कर ले। पद, प्रभुत्व पा ले, उसके लिए कितना ही अन्याय करना पड़े, ऐसे जनों से परोपकार की आशा नहीं हो सकती।

आगे भगवान ने फरमाया है :-

"यह हक़ीकत देव ज्योति में खुलती है कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य किसी प्रकार का भी सुख हासिल करना नहीं। बल्कि आत्मिक मोक्ष और विकास है"

आत्मिक सत्य ज्ञान पाए बिना मनुष्य में सुधार सम्भव नहीं। बेशक कुछ सात्विक जीवन धारी जन हुए हैं, अब भी हैं और होते रहेंगे जो स्वार्थ से ऊपर होकर जन समुदाय के लिए बहुत उपयोगी हुए हैं। परन्तु यह सबके लिए सम्भव नहीं। इसलिए हम अपनी अपनी योग्यताओं को पहचानें और उसके अनुसार स्वार्थ भाव से ऊपर उठकर सब जगतों के लिए कुछ सेवाकारी बनें हम इस संसार से रोते हुए न जाएं। जैसे कनल साहिब ने फरमाया था, कि "अगर मैंने वकालत छोड़कर परोपकार में जीवन न लगाया तो मेरी अर्थी रोती जाएगी।" काश! हम इस सचाई को समझ सकें।

(सुरजीत बराड़)

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

देश विदेश के समाचार

1. चुनाव आयोग के अफसरों पर हत्या का केस दर्ज होना चाहिए :- हाई कोर्ट मद्रास।
2. चीन ने मेडिकल सप्लाई ले जा रही कार्गो उड़ाने रोकी, जब सारी दुनिया भारत की सहायता के लिए आगे आ रही है।
3. पूर्व जज बोले आयोग के काम का दख़ल उचित नहीं, वरिष्ट वकील बोले- सुप्रीम कोर्ट रूकवा सकता था चुनाव।
4. वैकसीनेशन में तेजी वक्त की ज़रूरत :- रिजर्व बैंक
5. तीरंदाजी में भारत को तीन गोल्ड मैडल - यह वर्ल्ड कप में हमारा बेस्ट प्रदर्शन।
6. बेअदबी मामले में अब सिद्धू को जवाब देने उतरे मजीठिया।
7. पंजाब में करोना के कारण युद्ध जैसे हालात - नाईट कर्फ्यू अब 6 से आर्मी पैरामैडीकल स्टाफ भी मदद के लिए आगे आया।
8. जनता को अब नहीं काटने पड़ेंगे चक्कर, जल्द मिलेंगे एन. ओ.सी. हरियाणा सरकार।
9. पंचकूला निगम में डेढ़ साल में हुए घोटालों की जांच शुरू 15 दिन में आएगी रिपोर्ट

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक
"धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts